सफल राजस्थान

डाक पं. संख्या :
जयपुर सिटी/129/2018-20

मजबूत इरादे, बढ़ते कदम

सफल राजस्थान
न्यूज पेपर से जुड़ने के लिये संपर्क करें।
safalraj2012@gmail.com
web : www.safalrajasthan.com
Contact 8829966661, 9251166661, 9214466661

वर्ष- 3 | अंक-40 | RNI. NO : RAJHIN/2016/69327 | सोमवार, जयपुर 20 मई, 2019 | साप्ताहिक | पृष्ठ-4 | मूल्य : 7 रुपए

पायलट का प्रचार अभियान, हर सीट पर चार उड़ान

डिप्टी सीएम की 10 राज्यों में 128 रैली

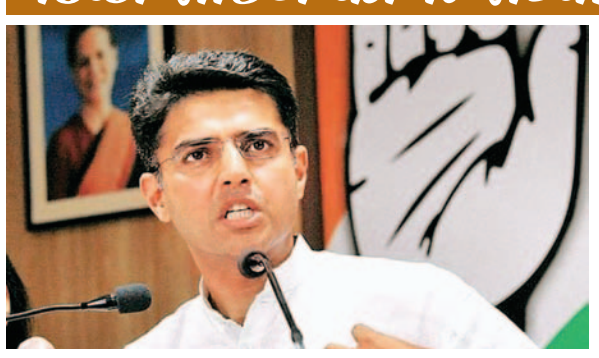

सफल राजस्थान

जयपुर। राजस्थान में अपने नेतृत्व में पार्टी को विधानसभा चुनाव जिताने के बाद कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष एवं उप-मुख्यमंत्री सचिन पायलट लोकसभा चुनाव में भी पूरी ताकत से जुटे रहे। युवा नेता के तौर पर देश के दस राज्यों में प्रचार के बीच राजस्थान की हर संसदीय सीट पर उन्होंने औसतन तीन चुनावी संभाएं की। चुनाव के दौरान उन्होंने हर दिन कम से कम दो सभाएं, रोड शो किए।

दो महीने में 128 सभाएं : पायलट राजस्थान समेत दस राज्यों में कांग्रेस के प्रत्याशियों के समर्थन में प्रचार करने पहुंचे। डेढ़ महीने के भीतरे पायलट राजस्थान की सभी 25 सीटों पर प्रचार करने पहुंचे और हर सीट पर औसतन चार बार उनके कार्यक्रम हुए। उन्होंने राजस्थान में 106 चुनावी सभाएं की, जबकि प्रदेश के बाहर 22 जगह पहुंचे।

पायलट ने 14 मार्च को सीकर जिले के लक्ष्मणगढ़ से चुनावी सभाओं का आगाज किया। आखिरी सभा 15 मई को उन्होंने पश्चिम बंगाल के कोलकाता में की। इसके अलावा उत्तरप्रदेश, असम, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, तेलंगाना में सभाओं को संबोधित किया।

वह सहारनपुर, शामली, उत्तरकाशी, हरिद्वार, छवेला, लातूर, मोरदाबाद, टिहरी गढ़वाल, कोलकाता, मुरैना, भोपाल, दिल्ली, कुरुक्षेत्र, गुरुग्राम, राजगढ़ आदि सीटों पर प्रचार करने पहुंचे।

सिंधी समाज का सामुदायिक भवन जल्द होगा खाली : धारीवाल

सफल राजस्थान

कोटा। *सिंधी सोश्यल सोसायटी के अध्यक्ष महेश आहुजा ने बताया कि गत कांग्रेस सरकार में सरकार द्वारा सिंधि समाज को सीएडी रोड पर भुखण्ड देकर सामुदायिक भवन का निर्माण कराया गया और उसका नाम शहिद हेमू कालानी सामुदायिक भवन रखा गया। पूरे हाड़ौती में सिंधि समाज का यह एक मात्र सामुदायिक भवन था जो बरसो बाद मिला। जिस पर भाजपा सरकार द्वारा अवैध रुप से कब्जा कर शहिद हेमू कालानी भवन को अभय कमांड सेंटर सीसीटिवी कंट्रोल रुम बना दिया गया जिससे सिंधी समाज को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा और जिसके लिये समाज के लोगो ने कई प्रदर्शन भी किये पर पिछली भाजपा सरकार की कब्जा करने की नियत नही बदली और भवन पर कब्जा किये मानी पर आज पुनः वर्तमाप कांग्रेस सरकार में यूडीएच मंत्री शांति कुमार धारिवाल ने सामुदायिक भवन का दौरा किया और कब्जा किये हुए सीसीटिवी कंट्रोल रुम को अवैध बताया जिससे समाज में खुशी की लहर दौड़ गई और लंबे संघर्ष की जीत से हर चेहरा खिल उठा। सिंधि समाज के लोगों ने धारिवाल जी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मुख्य रुप से महेश आहुजा, विकास माधवानी, विनोद लालवानी, भानू सूखेजा ने अभय कमांड सेंटर सीसीटिवी कंट्रोल रुम के अधिकारियों को सामुदायिक भवन जल्द खाली करने की मांग रखी।*

लोकिता वेलफेयर सोसायटी का परिन्डा अभियान शुरु

सफल राजस्थान

जयपुर। लोकिता वेलफेयर सोसायटी द्वारा बेजुबान पक्षियों के लिए परिंडे बांधने का अभियान शुरू किया। अभियान की शुरुआत सेंट्रल पार्क जयपुर से की गई सोसायटी के सचिव राजकुमार चौधरी ने बताया कि सोसायटी हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी प्रदेश में कई जिलों में परिंडे बांधने का अभियान चलाएगी और बेजुबान पक्षियों के पानी की व्यवस्था करेगी और संस्था के सभी सदस्यों ने संकल्प लिया है कि जो भी परिंडे बांधे जाएंगे उन परिंडो में पानी भरने की जिम्मेदारी सोसाइटी के सभी सदस्यों की है और समय-समय पर उनकी सफाई का भी अभियान चलाया जाएगा। कार्यक्रम में सोसायटी के अध्यक्ष अरविंद गोयल, सचिव राजकुमार चौधरी, कोषाध्यक्ष मुकेश मोदी, प्रचार मंत्री नरेश जैन, प्रवक्ता राजेश सैनी नितेश चौधरी, शिवकुमार अवार, तरुण चौधरी, अर्पित मोदी, गौरव यादव, ऋषि मोदी, स्नेहांश शर्मा आदि उपस्थित रहे।

राजस्थान बोर्ड / 99 फीसदी अंक लाई झुंझुनूं की श्रुति

सालभर से नहीं देखा है टीवी

सफल राजस्थान

झुंझुनूं। राजस्थान में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का रिजल्ज जारी कर दिया गया है। जिसमें झुंझुनू की रहने वाली श्रुति हलवाई ने 500 में से 495 अंक के साथ 99 प्रतिशत हासिल की है। बता दें कि श्रुति ने हिंदी में 97 और कैमिस्ट्री में 98 अंक प्राप्त किए हैं। इसके अलावा हिंदी, अंग्रेजी और गणित में 100 में से 100 अंग आए हैं। रिजल्ट घोषित होने के बाद से श्रुति के घर पर जश्न का माहौल है। सभी ने एक दूसरे को मिठाईयां भी खिलाई।

श्रुति ने बताया कि अपनी इस सफलता के पीछे उनके घरवालों का पूरा साथ रहा। उन्होंने बिना किसी कोचिंग की मदद के ये मुकाम हासिल किया। वे रोज स्कूल से आने के बाद 6 से 7 घंटे पढ़ाई किया करती थी। जिसके साथ करीब एक साल से टीवी नहीं देखा। सोशल मीडिया की इस्तेमाल भी दिन में सिर्फ आधा घंटा ही किया। जिसमें वे इंस्पाइरिंग वीडियो और पढ़ाई से संबंधित चीजे हीं देखा करती थी।

स्टार्टअप शुरू करना चाहती है श्रुति

अपने करियर के बारे में बात करते हुए श्रुति ने कहा कि वे एक बिजनेस वुमन बनना चाहती हैं। जिसके लिए अपना स्टार्टअप शुरू करना चाहती हैं। वे झुंझुनू एकेडमी की स्टूडेंट हैं। जानकारी अनुसार, श्रुति के झुंझुनू के जोशीयों के गट्टे की रहने वाली हैं। यहीं पर उनके पिता जयप्रकाश की मिठाई की दुकान है। वे यहां के जाने माने हलवाई हैं। जो केवल लड्डू बनाने के लिए फेमस हैं। वहीं, घर में मां नीतू देवी और एक बहन है।

अग्रवाल समाज की अग्रोहाधाम सहित अन्य दर्शनीय स्थलों की त्रिदिवसीय यात्रा 25 से

सफल राजस्थान

अजमेर। अग्रवाल समाज अजमेर की ओर से अग्रवाल समाज के अग्रकुल प्रवर्तक अग्रसेन महाराज की जन्म स्थली एवं कर्म भूमि अग्रोहाधाम (हिसार) सहित राजस्थान के प्रमुख दर्षनीय स्थलो की त्रिदिवसीय यात्रा का कार्यक्रम निर्धारित किया गया। यह यात्रा 25, 26 व 27 मई को होगी।

अग्रवाल समाज अजमेर के अध्यक्ष पूर्व पार्षद शैलेन्द्र अग्रवाल व महासचिव नरेन्द्र बंसल ने यह जानकारी देते हुए बताया कि श्री अग्रसेन महाराज की जन्म स्थली एवं कर्म भूमि अग्रोहाधाम होने से अग्रवाल बन्धुओं की इच्छा रहती है कि अग्रोहाधाम की यात्रा करे एवं सभी की धार्मिक भावनाओं को ध्यान में रखते हुए अग्रवाल समाज अजमेर ने श्री अग्रोहाधान की सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का त्रिदिवसीय कार्यक्रम तैयार किया है। इस यात्रा के लिए चार 2×2 एसी बसो की व्यवस्था की गई है जिसमें 176 समाज बन्धु, महिलाऐं व बच्चे यात्रा करेगे।

उन्होने बताया कि यह यात्रा 25 मई शनिवार को प्रात: 6:00 बजे अग्रवाल पाठशाला अजमेर से प्रस्थान करेगी जो खोड़ा गणेश जी व सालासर बालाजी के दर्षन करते हुए इसी दिन शाम को अग्रोहाधाम पहुंचेगी। अग्रोहा शक्तिपीठ में रात्रि विश्राम करने के पश्चात् अगले दिन 26 मई को यह यात्रा अग्रोहाधाम दर्शन कर राणीसती मन्दिर दादीधाम झुंझनु व शाकाम्भरी माता (सकराय) दर्षन करते हुए खाटु श्याम जी पहुंचेगी जहाँ रात्रि विश्राम होगा। इसी प्रकार 27 मई को यह यात्रा खाटु श्याम जी दर्शन कर जीण माता, मारोठ के भैरू जी होते हुए शाम को निम्बार्क तीर्थ सलेमाबाद पहुंचेगी जहाँ से उसी दिन रात्रि को वापस अजमेर पहुंच जायेगी।

अग्रवाल समाज अजमेर के वित्त सचिव प्रवीण अग्रवाल ने बताया कि सम्पूर्ण यात्रा 2ग2 एसी बसो द्वारा करवाई जायेगी तथा सभी यात्रियों के रात्रि विश्राम की व्यवस्था भी एसी कमरों में की जायेगी एवं यात्रा के दौरान दोनों समय भोजन, चाय, अल्पाहार आदि की व्यवस्था भी की गई है। उन्होने बताया कि सम्पूर्ण यात्रा का शुल्क मात्र 3100/- प्रति व्यक्ति रखा गया है जिसमें आना, जाना, रहना, भोजन आदि की सम्पूर्ण व्यवस्थाऐं शामिल है।

शैलेन्द्र अग्रवाल व नरेन्द्र बंसल ने बताया कि यात्रा की सुचारू व्यवस्थाओं के लिए अध्यक्ष शैलेन्द्र अग्रवाल, महासचिव नरेन्द्र बंसल, कोषाध्यक्ष प्रवीण अग्रवाल सहित जंवरीलाल बंसल, गिरधारीलाल मंगल, बी.पी.मित्तल, प्रदीप अग्रवाल, राजकुमार गर्ग, राजेन्द्र अग्रवाल, कैलाश चन्द अग्रवाल व अनिता बंसल को यात्रा संयोजक बनाया गया है। इनके साथ ही संस्था के अन्य पदाधिकारी भी यात्रा को सफल बनाने के लिए निरन्तर प्रयास कर रहे है।

पानी की सप्लाई नहीं होने से लोग परेशान

नवलगढ़ (सफल राजस्थान)। कस्बे के वार्ड 16 व 21 के लोग पानी की सप्लाई नहीं होने के कारण परेशान हैं। मोहल्ले के लोगों ने बताया कि वार्ड में झाझड़ रोड पर स्थित मुक्तिधाम में स्थित पानी की टंकी से पानी सप्लाई हो रहा था, लेकिन अब दो रोज से पानी की सप्लाई नहीं हो रही है। इस कारण रोजेदार पानी के लिए परेशान हो रहे हैं। अन्य दिनों में भी पानी की सप्लाई करीब 15 मिनट आती थी, जिससे पानी की पूर्ति सही ढंग से नहीं हो पा रही थी।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की पुण्यतिथि मनाई जायेगी

चौमूं (सफल राजस्थान)। शहर के मोरीजा रोड पर स्थित कांग्रेस कार्यालय गोठवाल भवन में दिनांक 21 मई, मंगलवार को प्रात: 9.00 बजे से भारत के पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न स्व. राजीव गांधी 21 मई 1991 को शहीद हुए थे। उनकी पुण्यतिथि को देश में आतंकवाद विरोधी दिवस के रूप में मनाया जायेगा। इस मौके पर कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष, कांग्रेस नगर कमेटी, कांग्रेस ब्लॉक कमेटी, सेवादल, महिला कांग्रेस, युथ कांग्रेस, एनएसयूआई, पार्षदगण, जिला पार्षदगण, पंसस सदस्य व कांग्रेस कार्यकर्ता के द्वारा राजीव गांधी की पुण्यतिथि पर पुष्पांजली अर्पित की जायेगी। यह जानकारी नगर अध्यक्ष सुरेश विजयवर्गीय ने दी।

क्लब के चौथे स्थापना दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

सखी सहेली क्लब ने मदर्स डे और चार्टर डे मनाया

सफल राजस्थान

जयपुर। सखी सहेली क्लब एक शिल्पी फाउंडेशन ने मालवीय नगर स्थित एक होटल में मदर्स डे सेलिब्रेट किया। साथ ही क्लब के सफलतापूर्वक चार वर्ष पूरे होने पर (चार्टर डे) भी मनाया गया।

क्लब की अध्यक्ष शिल्पी अग्रवाल ने बताया कि इन चार वर्षों में क्लब ने बहुत ही बेहतर तरीके से सामाजिक कार्य एवं बड़े स्तर पर तीज गणगौर आदि कार्यक्रम आयोजित किये हैं। इन आयोजनों से सखी सहेली क्लब का अपना एक मुकाम बना है। कार्यक्रम में कई तरह के गेम्स खेले गये और विजेताओं

को पुरस्कृत किया गया। वहीं (मदर्स डे) पर मां की महिमा को सभी ने अपने शब्दों में बयां किया। इस मौके पर श्यामा अग्रवाल को बहू एवं बेटी के साथ बेहतर सामंजस्य के लिए सम्मानित किया गया। वहीं कमलेश सोनी को सिंगल मदर होते हुए अपने एवं बेटियों के संघर्ष के बाद सफलता के लिए सम्मानित किया गया। सबी माताओं को बुके देकर उनका सम्मान किया गया। वहीं विजेता सदस्य सीमा माणक एवं सीमा सिंघल को प्राइज देकर प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर मधु शुक्ला, राज, श्यामा, कमलेश, पदमा, सरिता, मोना, सरोज, मंजू, सोनू, भार्गवी इत्यादि सदस्य प्रमुख रूप से उपस्थित थी। कार्यक्रम के अंत में शिल्पी अग्रवाल ने सभी का धन्यवाद व्यक्त किया।

यात्रियों का दल केदारनाथ की धार्मिक यात्रा पर रवाना

सांगोद (सफल राजस्थान)। धार्मिक यात्रा के लिए यात्रियों का एक दल रविवार को सांगोद के बोरदा गांव से रवाना हुआ। जिनमें रामगोपाल पोटर, केलाबाई, लक्ष्मीनारायण गहलोत, बंसन्ती बाई सीताराम पोटर, जमनालाल गहलोत भी पत्नी सहित यात्रा के लिए रवाना हुऐ है। सभी यात्रियों को मालाए पहनाई गई। यात्रियों की यह धार्मिक यात्रा लगभग 15 से 20 दिन की रहेगी। इस दौरान यात्रा की केदारनाथ,बद्रीनाथ, ऋषिकेश, हरिद्वारा, गंगोत्री, जमनोत्री, अलकनंदा, देवप्रयाग सहित हिमाचल प्रदेश व उत्तराखण्ड के अनेक धार्मिक स्थानों पर दर्शन के उपरांत पुन: प्रस्थान करेंगे।

मीडिया के क्षेत्र में करियर बनाने का सुनहरा अवसर...
सफल राजस्थान
राजस्थान के सभी जिलों में
'सफल राजस्थान'
समाचार पत्र में कार्य करने के लिये
युवक/युवतियों की आवश्यकता है।
safalraj2012@gmail.com
जी-48, सिने स्टार (सिटी स्टार), सेंट्रल स्पाईन, विद्याधर नगर, जयपुर-पिन. 302039
मो. 8829966661, 9214466661

डीएलबी ने 40 फीट रोड पर ही हैरिटेज होटल को मंजूरी दे दी

सफल राजस्थान

जयपुर। मास्टर प्लान में छेड़छाड़ को लेकर एक तरफ पूरी सरकार हिली है और सीएस तक को सुप्रीम कोर्ट में जवाब देना पड़ रहा है। दूसरी तरफ अंदरखाने शहर का नक्शा बिगाड़ने के खेल जारी है। पर्यटन विभाग ने सशर्त अनुमति दी कि यदि मास्टर प्लान की पालना हो रही है तो आवासीय क्षेत्र में हेरिटेज होटल की अनुमति दी जा सकती है। हालांकि मास्टर प्लान के अनुसार होटल के लिए कम से कम 60 फीट रोड और आवासीय से कॉमर्शियल लैंड यूज चेंज जरूरी है। डीएलबी ने इन नियमों को आधार मानकर अपने तरीके से सी-स्कीम में ही 12 मीटर चौड़ी रोड पर होटल निर्माण को जायज ठहरा दिया। इतना ही नहीं एक व्यक्ति के लिए मास्टर प्लान में छेड़छाड़ हुआ तो पूरे शहर में आवासीय में व्यावसायिक गतिविधियों का नया गोरखधंधा खोलने की नजीर बन जाएगी।

गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट तक मामला पहुंचने के बाद लार्जर बैंच ने मास्टर प्लान में छेड़छाड़ पर रोक लगा रखी है। ऐसी स्थिति में सी स्कीम में सरोजनी मार्ग के एक भूखंड पर हेरिटेज होटल रेस्टोरेंट की स्वीकृति के लिए नगर निगम ने डीएलबी डायरेक्टर से मार्ग दर्शन मांगा था। पत्र में लिखा है कि मास्टर प्लान 2025 में आवासीय भूखंड पर होटल स्वीकृति नहीं दी जा सकती है और यूनिफाइड बिल्डिंग बायलाज में भी होटल के लिए रोड की चौड़ाई 18 मीटर (60 फीट) आवश्यक है जबकि सरोजनी मार्ग के भूखंड के आगे 12 मीटर की रोड है। इसके जवाब में डीएलबी ने तीन दिन में ही जवाब दिया कि नगर निगम बजट हैरिटेज रेस्टोरेंट के लिए स्वीकृति प्रदान की जा सकती है।

सीकर की टीम सेमीफाइनल में हारी, बालक व बालिका वर्ग में जयपुर ने जीता खिताब

सफल राजस्थान

जयपुर। प्रिंस एकेडमी के ग्राउंड-9 पर चल रही राष्ट्रीय हॉकी चैंपियनशिप में रविवार को छत्तीसगढ़ की टीम एक बार फिर विजेता रही है। छत्तीसगढ़ की टीम ने मणिपुर की टीम को 7-4 से करारी शिकस्त दी है। छत्तीसगढ़ की सुलोचना ने दो गोल और हर्षिता सहू, ईशा साहू, नंदनी, मोनिका और कुसुम ने एक-एक गोल कर टीम को जीत दिलाई।

मैच का पहले दो गोल सुलोचना की ओर से शुरूआती दस मिनट में ही कर दिए गए। इस मैच में मैन ऑफ द मैच के खिताब से कुसुम को नवाजा गया। इसके बाद आंद्र प्रदेश और पटियाला के बीच हुए मैच में पटियाला ने 5-0 से जीत दर्ज की है। इस मैच में सुखवीर कॉर को 4 गोल के साथ मैन ऑफ द मैच चुना गया। वहीं तरनप्रीत कॉर ने एक गोल किया। सुबह की पारी का अंतिम मैच महाराष्ट्र और हॉकी केरल के बीच खेला गया। इसमें महाराष्ट्र ने 5-0 से जीत दर्ज की है। दूसरी पारी

में आयोजित राजस्थान और गुजरात के मैच में राजस्थान ने 2-1 से जीत हासिल की है। मैन ऑफ द मैच चितरानी को चुना गया। मुम्बई और पांडिचेरी के मैच में मुम्बई 3-0 से जीत गई। इस मैच में सांची को मैन ऑफ द मैच चुना गया।

खेल मंत्री अशोक चांदना ने प्रिंस एकेडमी में पहुंचकर खिलाडियों की हौसला अफजाई की। मैन ऑफ द मैच रहे खिलाड़ियों को पुरस्कृत भी किया गया। इस दौरान खेल मंत्री ने कहा कि खेलकूद जीवन का अहम हिस्सा बन चुका है। खिलाड़ियों की बेहतर सुविधाएं मिल रही है। प्रिंस एजुहब के निदेशक जोगेंद्र सुण्डा, चेयरमैन डॉ पीयूष सुण्डा एवं हॉकी राजस्थान के अध्यक्ष अरूण सारस्वत ने खेल मंत्री का स्वागत किया।

राज्य स्तरीय बास्केटबॉल चैंपियनशिप में रविवार सुबह हुए मैच में सीकर टीम सेमीफाइनल मुकाबले में जैसलमेर एकेडमी से मात खा कर बाहर हो गई। सीकर टीम 56 अंक ही बना सकी। वहीं जैसलमेर एकेडमी ने 68 अंक बनाए। गत वर्ष भी जैसलमेर एकेडमी से ही सीकर टीम को शिकस्त मिली थी। सात साल बाद बास्केटबॉल की नर्सरी कहे जाने वाले दूजोद गांव में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। शाम को बालक वर्ग के फाइनल मुकाबले में जैसलमेर एकेडमी को जयपुर ने मात दे दी। इसमें जयपुर ने 61 अंक और जैसलमेर एकेडमी ने 36 अंक बनाए। वहीं बालिका वर्ग के मैच में जयपुर एकेडमी ने 53 अंक के साथ जयपुर को 22 अंक पर रोक कर रोमांचक मुकाबले को अपने नाम कर लिया। डिफेंस नहीं करने से हुई बाहर सीकर सीकर के खिलाड़ी एक दूसरे को समय पर बॉल पास नहीं कर पाए और न ही डिफेंस बेहतर तरीके से कर सके। टीम के पास इस बार नए चेहरों के साथ पुराने अनुभवी खिलाड़ी भी थे,लेकिन दोनों ही खिलाड़ियों का तालमेल काम नहीं आया।

सम्पादकीय ... विमला देवी

अनदेखी की संहिता

पश्चिम बंगाल पुलिस को यह बात अच्छी तरह पता थी कि वहां भाजपा और तृणमूल कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच शुरु से टकराव का माहौल है। हर चरण के मतदान में हिंसक झड़पें देखी गईं। फिर भी जब भाजपा अध्यक्ष का रोड शो आयोजित किया गया।

चुनावों में रोड शो का चलन धीरे-धीरे शक्ति प्रदर्शन के अवसर में बदलता गया है। इसके चलते कई बार दलों के बीच तीखी झड़प की स्थिति भी पैदा हो जाती है। इसका ताजा और अप्रिय उदाहरण कोलकाता में भाजपा अध्यक्ष के रोड शो के दौरान देखने को मिला। उसमें भाजपा और तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता आपस में भिड़ गए, हिंसक झड़पें हुईं और विद्यासागर की मूर्ति तक तोड़ डाली गई। इस घटना के बाद दोनों दल एक-दूसरे पर दोषारोपण कर रहे हैं। इस प्रकरण में निर्वाचन आयोग की भूमिका एक बार फिर गंभीर रूप से प्रश्नांकित हुई है। हालांकि आयोग ने तत्काल निर्णय करते हुए चुनाव प्रचार को बीस घंटा पहले रोक दिया। राज्य के पुलिस महानिदेशक (सीआइडी) और गृह सचिव को तत्काल प्रभाव से हटा दिया। मगर फिर भी आयोग पर अंगुलियां उठनी बंद नहीं हुई हैं। पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा का इतिहास रहा है। वहां हर चुनाव के दौरान पार्टियों के कार्यकर्ता आपस में भिड़ते देखे जाते हैं, चाहे वह पंचायत स्तर का चुनाव ही क्यों न हो। इसी के मद्देनजर निर्वाचन आयोग ने इस बार वहां हर चरण में थोड़ी-थोड़ी सीटों के लिए मतदान कराने का खाका तैयार किया था। मगर वह हिंसा रोकने में कामयाब नहीं हो पाया है। पश्चिम बंगाल पुलिस को यह बात अच्छी तरह पता थी कि वहां भाजपा और तृणमूल कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच शुरु से टकराव का माहौल है। हर चरण के मतदान में हिंसक झड़पें देखी गईं। फिर भी जब भाजपा अध्यक्ष का रोड शो आयोजित किया गया, तो उसने एहतियाती कदम उठाना जरूरी क्यों नहीं समझा। क्या उसे इस तरह की किसी झड़प का अंदेशा नहीं था? कैसे दोनों दलों के कार्यकर्ता इस कदर बेलगाम हो गए कि उन्हें संभालना पुलिस के वश की बात नहीं रह गई और वे मार-पीट, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने में कामयाब हो गए। ऐसे जुलूसों के लिए राजनीतिक दल पहले से मंजूरी लेते, पुलिस को अपने कार्यक्रम के बारे में सूचना देते हैं। उस आधार पर उसमें जुटने वाली भीड़ और जुलूस के दौरान संभावित गड़बड़ियों का अंदाजा लगाया जाता है। पुलिस इसका आकलन करने में कैसे विफल रही? इसकी जवाबदेही से पश्चिम बंगाल पुलिस बच नहीं सकती। मगर दोनों राजनीतिक दल भी इस घटना के लिए एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगा कर अपनी जवाबदेही से नहीं बच सकते। चुनाव में अपने प्रतिपक्षी के आरोपों का मर्यादित ढंग से जवाब देना, उसकी कमियों को उजागर करना लोकतांत्रिक प्रक्रिया के अनुसार गलत नहीं कहा जा सकता। मगर प्रतिद्वंद्वी को रोकने, दबाने या भयाक्रांत करने की मंशा से अपने कार्यकर्ताओं को बेलगाम छोड़ देना या हिंसा के लिए उकसाना किसी भी रूप में लोकतांत्रिक नहीं कहा जा सकता। आखिर कार्यकर्ताओं की ऐसी हरकतों पर राजनीतिक दलों की अंतिम जवाबदेही होती है। चुनाव के लिए बाकायदा आदर्श आचार संहिता है, जिसका पालन करना हर दल के लिए जरूरी होता है। मगर शायद राजनीतिक पार्टियों ने इस तकाजे को भुला दिया है। उसे याद कराते रहना आखिरकार निर्वाचन आयोग की जिम्मेदारी है। समझना मुश्किल है कि कैसे राजनीतिक दल रोड शो के नाम पर शक्ति प्रदर्शन करने की छूट ले बैठे हैं, उसकी कोई मर्यादा क्यों नहीं रह गई है। फिर ऐसा क्यों हो चला है कि पार्टियों को निर्वाचन आयोग का कोई भय नहीं रहा। कोलकाता की घटना के बाद निर्वाचन आयोग की भूमिका गंभीर रूप से प्रश्नों के घेरे में आई है।

> इस घटना के बाद दोनों दल एक-दूसरे पर दोषारोपण कर रहे हैं। इस प्रकरण में निर्वाचन आयोग की भूमिका एक बार फिर गंभीर रूप से प्रश्नांकित हुई है। हालांकि आयोग ने तत्काल निर्णय करते हुए चुनाव प्रचार को बीस घंटा पहले रोक दिया। राज्य के पुलिस महानिदेशक (सीआइडी) और गृह सचिव को तत्काल प्रभाव से हटा दिया। मगर फिर भी आयोग पर अंगुलियां उठनी बंद नहीं हुई हैं। पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा का इतिहास रहा है।

पाठकों के पत्र

यदि आप आसपास के परिवेश से प्रभावित होकर कुछ लिखने का साहस रखते हैं, **इस पते पर लिखें।**

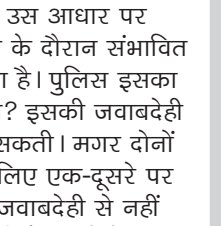

सफल राजस्थान

जी-48, सिने स्टार (सिटी स्टार), सेन्ट्रल स्पाईन, विद्याधर नगर, जयपुर -302039

ईमेल-

E-Mail : safalraj2012@gmail.com

मो. : 8829966661

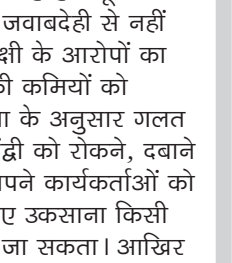

भंवर में शिक्षा

शैक्षणिक उन्नति का सवाल सीधे तौर पर शिक्षा की गुणवत्ता से जुड़ा है, न कि पाठशालाओं में बच्चों की संख्या से। सरकार के पास शिक्षा के संबंध में योजनाओं का तो अंबार है, लेकिन उचित क्रियान्वयन के अभाव में इनसे शिक्षा के क्षेत्र में लाभ होता कभी देखा नहीं गया। ऐसी योजनाएं शिक्षा के मूल उद्देश्यों की पूर्ति से कोसों दूर हैं। 'समग्र शिक्षा योजना' ऐसी ही एक योजना है जिसे प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा के सभी स्तरों पर गुणवत्ता में सुधार के लिए एक बड़े बदलाव के तौर पर पेश किया गया था। लेकिन वास्तविक स्थिति इसके बिल्कुल उलट है। इस योजना के अंतर्गत ऐसा कुछ भी नहीं किया गया जिससे कहा जा सके कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की दिशा में कोई सार्थक प्रयास किए गए हैं। तकनीक का लाभ उठाने और अच्छी गुणवत्ता से युक्त शिक्षा तक सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की पहुंच बनाना भी इस योजना का एक उद्देश्य था।

इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि देश में ज्यादातर पाठशालाएं भवन, पर्याप्त संख्या में शिक्षक, पुस्तकालय, शौचालय और पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। ऐसी पाठशालाएं भी बड़ी संख्या में हैं जहां कुछ सुविधाएं उपलब्ध कराने की खानापूर्ति भर कर दी गई है। कई पाठशालाएं ऐसी हैं जहां शौचालय तो हैं, लेकिन उनकी दशा उपयोग करने लायक नहीं है। यह निश्चित रूप से शिक्षा का अधिकार कानून का उल्लंघन है। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण ही है कि शिक्षा का अधिकार (आरटीई) कानून बनने के बाद देश में शिक्षा के स्तर में कोई बड़ा सकारात्मक बदलाव आया है। यह तो जरूर कहा जा सकता है कि इस कानून के बनने के बाद प्राथमिक पाठशालाओं में बच्चों की संख्या बढ़ी है। लेकिन ऐसी संख्या का तब तक कोई महत्त्व नहीं जब तक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार नहीं लाया जाता। गुणवत्ता के अभाव में बच्चे पाठशालाओं में पहुंच कर भी हासिल कुछ नहीं कर पा रहे। पाठशालाओं में बच्चों की संख्या बढ़ाने से कहीं ज्यादा जरूरी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना है। शैक्षणिक उन्नति का सवाल सीधे तौर पर शिक्षा की गुणवत्ता से जुड़ा है, न कि पाठशालाओं में बच्चों की संख्या से। सरकार के पास शिक्षा के संबंध में योजनाओं का तो अंबार है, लेकिन उचित क्रियान्वयन के अभाव में इनसे शिक्षा के क्षेत्र में लाभ होता कभी देखा नहीं गया। ऐसी योजनाएं शिक्षा के मूल उद्देश्यों की पूर्ति से कोसों दूर हैं। 'समग्र शिक्षा योजना' ऐसी ही एक योजना है जिसे प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा के सभी स्तरों पर गुणवत्ता में सुधार के लिए एक बड़े बदलाव के तौर पर पेश किया गया था। लेकिन वास्तविक स्थिति इसके बिल्कुल उलट है। इस योजना के अंतर्गत ऐसा कुछ भी नहीं किया गया जिससे कहा जा सके कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की दिशा में कोई सार्थक प्रयास किए गए हैं। तकनीक का लाभ उठाने और अच्छी गुणवत्ता से युक्त शिक्षा तक सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की पहुंच बनाना भी इस योजना का एक उद्देश्य था। लेकिन इसकी पूर्ति करने में सभी राज्य और केंद्र शासित प्रदेश नाकाम रहे। इसी तरह 'दीक्षा' नाम से भी एक कार्यक्रम चलाया गया था जिसे शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में प्रचारित किया गया, लेकिन यह भी शिक्षा के मूल उद्देश्यों की पूर्ति से दूर ही रहा। इसी तरह एक योजना 'नई एकीकृत विद्यालय शिक्षा योजना' के नाम से भी चलाई गई जो सर्वशिक्षा अभियान, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान और शिक्षक-शिक्षण अभियान पर आधारित है। इस योजना के लिए पचहत्तर हजार करोड़ रुपए के बजट का प्रावधान किया गया है। हालांकि यह योजना सबको शिक्षा और अच्छी शिक्षा की परिकल्पना के परिप्रेक्ष्य में लाई गई है जिसका लक्ष्य देश में सबको प्री-नर्सरी से लेकर बारहवीं तक की शिक्षा-सुविधा उपलब्ध कराने के लिए राज्यों की सहायता करने पर केंद्रित है, लेकिन शिक्षा के मूल उद्देश्यों की पूर्ति इससे भी नहीं हो रही है। इस योजना में शिक्षा के क्षेत्र में सतत विकास के लक्ष्यों के अनुरूप नर्सरी से लेकर माध्यमिक स्तर तक सबके लिए समान रूप से समग्र और गुणवत्ता से युक्त शिक्षा सुनिश्चित करना, शिक्षकों और प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित करते हुए विद्यालय-शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारना और छात्रों के सीखने की क्षमता में वृद्धि करवा कर उन्हें कई तरह के कौशल और ज्ञान में दक्ष बनाना जैसी बातों का समावेश था। लेकिन नतीजा वही, ढाक के तीन पात रहा। सरकार द्वारा संसद में पेश एक रिपोर्ट के अनुसार देश में तेरह लाख सरकारी पाठशालाओं में से एक लाख पांच हजार छह सौ तीस पाठशालाएं सिर्फ एक-एक शिक्षक के भरोसे चल रही हैं। यह बात और है कि कई पाठशालाएं ऐसी हैं जहां एक भी शिक्षक नहीं है। वैसे तो, शिक्षा की यह तस्वीर देश के सभी राज्यों में देखी जा सकती है, लेकिन मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान शिक्षा की इस दुर्दशा के मामले में दूसरे राज्यों से बहुत आगे हैं। ऐसी किसी पाठशाला में कार्यरत एक शिक्षक पर बच्चों को सभी विषय पढ़ाने का दायित्व तो है ही, साथ ही उसे बच्चों के दोपहर के भोजन की भी व्यवस्था करनी होती है। कहां तो शिक्षा का अधिकार कानून के अंतर्गत यह प्रावधान किया गया है कि किसी भी पाठशाला में तीस से पैंतीस बच्चों पर एक शिक्षक का होना जरूरी है, जबकि देश की लाखों पाठशालाओं में शिक्षक ही नहीं हैं! इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि देश में ज्यादातर पाठशालाएं भवन, पर्याप्त संख्या में शिक्षक, पुस्तकालय, शौचालय और पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। ऐसी पाठशालाएं भी बड़ी संख्या में हैं जहां कुछ सुविधाएं उपलब्ध कराने की खानापूर्ति भर कर दी गई है। कई पाठशालाएं ऐसी हैं जहां शौचालय तो हैं, लेकिन उनकी दशा उपयोग करने लायक नहीं है। यह निश्चित रूप से शिक्षा का अधिकार कानून का उल्लंघन है। वर्तमान समय में शिक्षा जहां बुरी तरह से सरकार की उपेक्षा की शिकार है, वहीं शिक्षा के प्रति शिक्षकों की कोताही व उदासीनता और शिक्षक-राजनीति से भी शिक्षा और शिक्षा-मूल्यों का ह्रास हुआ है। शिक्षक शिक्षण कार्य से ज्यादा राजनीतिक गतिविधियों में दिलचस्पी लेने लगे हैं। ये राजनीतिक गतिविधियां विभागीय स्तर पर तो देखी ही जा सकती हैं, साथ ही महत्त्वाकांक्षाओं का यह जाल देश के राजनीतिक पैमाने पर भी देखा जा रहा है। इसकी एक जीती-जागती तस्वीर अपने असली रंग में लोकसभा व विधानसभा चुनावों में नजर आती है जब शिक्षक संघ किसी दल-विशेष के लिए काम करने लगते हैं। बहुत-से शिक्षकों के आचरण और ठाठ देख कर तो कहीं भी यह नहीं लगता कि इन्हें सरकार ने पाठशालाओं में पढ़ाने के लिए भर्ती किया है। देश में शिक्षक-राजनीति के खुले खेल का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि राजनीतिक दलों से ज्यादा शिक्षक-संघ हैं। हैरानी की बात तो यह है कि इन शिक्षक-संघों को विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा बाकायदा मान्यता मिली होती है। विभिन्न शिक्षक-संघों से जुड़े शिक्षकों को सरकारी शिक्षण-संस्थानों में कार्यरत दूसरे शिक्षकों से बिल्कुल अलग देखा जाता है। इन पर सरकार व प्रशासन द्वारा निर्धारित मापदंड भी लागू नहीं होते।

// उत्पीड़न का पाठ //

यह समझना मुश्किल है कि जिस शिक्षक ने बच्ची के साथ ऐसे बर्ताव में कक्षा के बाकी बच्चों तक को शामिल किया, उसके सोचने-समझने और उसकी मानसिक स्थिति का स्तर क्या होगा और वह किस तरह स्कूल में शिक्षक जैसे जिम्मेदार पद का निर्वाह कर रहा था? एक व्यक्ति की पृष्ठभूमि से उपजी कुंठा और उसके व्यवहार में घुली सामंती मानसिकता उसकी निजी समस्या हो सकती है। इसके लिए उसे अपने स्तर पर निपटने की जरूरत है। लेकिन अगर इसकी वजह से वह स्कूल में किसी बच्ची को होमवर्क अधूरा करने जैसे बेहद मामूली कारण से इतनी तकलीफदेह सजा देता है तो उसकी योग्यता संदिग्ध है। छोटे बच्चों का मन-मस्तिष्क पहले ही बेहद कोमल होता है। तिस पर समूची कक्षा के बच्चों के सामने और उनके जरिए ही शारीरिक यातना दिलाए जाने के बाद उसे भावनात्मक स्तर पर कितनी गहरी चोट पहुंची होगी।

यह समझना मुश्किल है कि जिस शिक्षक ने बच्ची के साथ ऐसे बर्ताव में कक्षा के बाकी बच्चों तक को शामिल किया, उसके सोचने-समझने और उसकी मानसिक स्थिति का स्तर क्या होगा और वह किस तरह स्कूल में शिक्षक जैसे जिम्मेदार पद का निर्वाह कर रहा था? यह सिहरा देने वाली बात है कि स्कूल में पढ़ने वाली किसी बच्ची को सिर्फ इसलिए उसके सहपाठियों से छह दिनों तक लगातार थप्पड़ लगवाया जाए कि उसने होमवर्क नहीं किया था। ऐसे शिक्षक की क्षमता और मनोदशा का अंदाजा लगाया जा सकता है, जिसने कक्षा के सभी बच्चों को पीड़ित बच्ची को थप्पड़ मारने का आदेश दिया था। इस मामले में संतोष बस इतने से किया जा सकता है कि एक स्थानीय अदालत ने अब उस शिक्षक को आखिरकार जेल भेज दिया है। यह एक तरह से बड़ा सबक है कि स्कूली बच्चों के साथ शिक्षकों को अपने बर्ताव की सीमा समझनी चाहिए। यह मामला पिछले साल ग्यारह जनवरी को सामने आया था, जिसमें छठी कक्षा में पढ़ने वाली एक बच्ची अपनी बीमारी की वजह से दस दिनों तक स्कूल नहीं जा पाई और इस वजह से उसका होमवर्क पूरा नहीं हो पाया था। सिर्फ इतने के लिए एक शिक्षक ने छात्रा को उसके ही सहपाठियों से दोनों गालों पर लगातार छह दिन तक एक सौ अड़सठ थप्पड़ लगवा कर प्रताड़ित किया। यह समझना मुश्किल है कि जिस शिक्षक ने बच्ची के साथ ऐसे बर्ताव में कक्षा के बाकी बच्चों तक को शामिल किया, उसके सोचने-समझने और उसकी मानसिक स्थिति का स्तर क्या होगा और वह किस तरह स्कूल में शिक्षक जैसे जिम्मेदार पद का निर्वाह कर रहा था? एक व्यक्ति की पृष्ठभूमि से उपजी कुंठा और उसके व्यवहार में घुली सामंती मानसिकता उसकी निजी समस्या हो सकती है। इसके लिए उसे अपने स्तर पर निपटने की जरूरत है। लेकिन अगर इसकी वजह से वह स्कूल में किसी बच्ची को होमवर्क अधूरा करने जैसे बेहद मामूली कारण से इतनी तकलीफदेह सजा देता है तो उसकी योग्यता संदिग्ध है। छोटे बच्चों का मन-मस्तिष्क पहले ही बेहद कोमल होता है। तिस पर समूची कक्षा के बच्चों के सामने और उनके जरिए ही शारीरिक यातना दिलाए जाने के बाद उसे भावनात्मक स्तर पर कितनी गहरी चोट पहुंची होगी, इसका सिर्फ अंदाजा लगाया जा सकता है। मनोवैज्ञानिक लिहाज से देखें तो कई बार इस तरह की घटनाओं से बच्चों के मन पर गहरी चोट लगती है और बहुत बाद के दिनों में भी उनके समूचे व्यक्तित्व पर इसका नकारात्मक असर कायम रहता है। अफसोस की बात यह है कि इस मसले पर शिक्षाविदों से लेकर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सोचने-समझने वाले विशेषज्ञों तक ने एक स्वर में कहा है कि स्कूली बच्चों को किसी भी तरह की हल्की या सख्त सजा नहीं दी जाए। इस मामले में काफी पहले सुप्रीम कोर्ट ने भी स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किया था। लेकिन आज भी बहुत सारे शिक्षक कानून को तो धता बताते ही हैं, वे पुरानी और बेमानी मान्यताओं के आधार पर यह मान कर चलते हैं कि दंड या पिटाई स्कूली शिक्षा का अभिन्न अंग हैं। यह एक पिछड़ी सोच है, जिसका बहुत बड़ा खमियाजा हमारे समूचे समाज को उठाना पड़ा है। स्कूलों या घर में इस तरह की यातना या उत्पीड़न के दौर से गुजरने वाले बच्चे बाद में खंडित व्यक्तित्व का शिकार हो जाते हैं और उसी तरह का व्यवहार दूसरों के साथ होने को सही ठहराते हैं। जरूरत इस बात की है कि बच्चों की भावनात्मक बुनावट और मनोविज्ञान को समझ कर उनकी पढ़ाई और उनके साथ होने वाले व्यवहारों का पैमाना तय किया जाए, ताकि शिक्षा और व्यक्तित्व की कसौटी पर हम एक बेहतर और इंसानी मूल्यों से लैस पीढ़ी का निर्माण कर सकें।

निर्विवाद मारक उग्रवादी

प्रसिद्ध पत्रिका 'टाइम' के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को 'डिवाइडर इन चीफ' करार देने के एकदम उपयुक्त होने का ताजातरीन सबूत तमिलनाडु से आया है। केसरिया पलटन और उसके धर्म-संस्कृति के नाम पर राजनीति के तरह-तरह के अभियानों से दूर और काफी हद तक अछूते रहे इस दक्षिणी राज्य में भी, मोदी के राज के पांच साल बाद और उससे भी बढ़कर 2019 के आम चुनाव के लिए मोदी-शाह की भाजपा के अभियान के आखिर तक आते-आते, ठीक वही उग्र, बहुसंख्यकवादी सांप्रदायिक भाषा सुनाई देने लगी है, जो पिछले पांच साल में हिंदी पट्टी में और पश्चिमी भारत समेत देश दूसरे कई हिस्सों में, पहले ही आम हो गई थी। तमिलनाडु सरकार के दुग्ध और डेयरी विकास मंत्री, राजेंद्र बालाजी ने सोमवार को बाकायदा एक बयान जारी कर कहा कि जाने-माने फिल्मकार और राज्य में नयी-नयी बनी पार्टी एमएनएम के संस्थापक, कमल हासन की ''जीभ काट लेनी चाहिए'! हासन का कसूर सिर्फ इतना था कि उन्होंने गांधी की प्रतिमा के सामने खड़े होकर, केसरिया पलटन को नागवार यह सच दोहराने की जुर्रत की थी कि, ''स्वतंत्र भारत का पहला उग्रवादी हिंदू था और उसका नाम नाथूराम गोडसे था। वहीं से इसकी ''उग्रवाद' की शुरुआत हुई।' गोडसे से स्वतंत्र भारत में उग्रवाद/आतंकवाद की शुरुआत होने पर भले बहस हो सकती हो, पर इसका स्वतंत्र भारत का सबसे चर्चित और मारक उग्रवादी हमला होना निर्विवाद है। तमिलनाडु में मोदी-शाह की भाजपा की नयी सहयोगी बनी, सत्ताधारी अन्नाद्रमुक के नेताओं ने उनके लिए, अगुआ मारक दस्ते की भूमिका ही संभाल ली है। इस संदर्भ में यह याद दिलाना भी जरूरी है कि 2019 के आम चुनाव के अपने लंबे प्रचार अभियान में खुद नरेन्द्र मोदी ने यह सरासर बेतुका दावा कर के कि ''हिंदू आतंकवादी हो ही नहीं सकता है।

हैलो.. हैलो..

हॉस्पिटल

गवर्मेंट सैटेलाइट हॉस्पिटल, बनीपार्क	2202449
महिला चिकित्सालय, सांगानेरी गेट	2610616
एसएमएस हॉस्पिटल	2560291
जनाना हॉस्पिटल	2378721
ईएसआई डिस्पेंसरी, मालवीयनगर	2522724
ईएसआई डिस्पेंसरी, प्रताप नगर	2792594

पुलिस

कंट्रोल रूम, जयपुर सिटी	2575715
कंट्रोल रूम, जयपुर ग्रामीण	2575774
कंट्रोल रूम, यातायात	2565630

होटल-ट्यूरिज्म

गणगौर	0141-2371641, 2371642, 2371644, 2371646
स्वागत	0141-2200595, 2206701, 09950996242
तीज	0141-2205482, 2205473, 2203199, 09829058458
होटल खासा कोठी	0141-2375151, 4063000, 09414073182

रोडवेज

कंट्रोल रूम हैड ऑफिस	0141-2373044
सेंट्रल बस स्टैंड सिंधी कैंप	0141-2207906, 2207912, 207913, 2207914
डीलक्स बस आरक्षण	0141-2205790
ड्यूटी ऑफिसर प्लेटफार्म	0141-2207907
ड्यूटी ऑफिसर सिंधी कैंप	0141.2207903

रेलवे

रेलवे पूछताछ	131
रेलवे पूछताछ	139

हैल्प लाइन

चाइल्ड हैल्प लाइन	0141-2353997-1098
बिजली हैल्प लाइन	0141-2354900-1912
ऑपरेशन गरिमा	0141-2204475
एनीमल हॉस्पिटल हैल्प लाइन	0141-2373237
हैल्प इन सफरिंग हैल्प लाइन	0141-2760012

ब्लड बैंक

संतोकबा दुर्लभजी मेमोरियल हॉस्पिटल	0141- 2566251, 2574189
सवाई मानसिंह हॉस्पिटल	0141-256 02912
स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक	0141-2545293, 2721771

अग्निशमन केन्द्र

अग्निशमन हैल्पलाइन	101
बनीपार्क	0141-2201898
बाईस गोदाम	0141-2211258
घाट गेट	0141-2615550
विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र	0141-2332573
एम आई रोड	0141-2375925

सांस्कृतिक केन्द्र

जवाहर कला केंद्र	0141-2706560
रविन्द्र मंच	0141-2619061

ट्यूरिस्ट प्लेस

अल्बर्ट हॉल म्यूजियम	0141-2570099
आमेर फोर्ट	0141-2530293
बिरला प्लेनेटोरियम	0141-2385094,
हवा महल	0141-618862
जंतर मंतर	0141-2610494
जयगढ़ फोर्ट	0141-2274848
नाहरगढ़ फोर्ट	0141-5148044
जयपुर जू	0141-2680494
राम निवास गार्डन	0141-2617319
साइंस पार्क	0141-2304654
सिटी पैलेस	0141-2608055

एम्बुलेंस

एम्बुलेंस हैल्पलाइन	108
जेके लोन एम्बुलेंस	0141-2619827
महिला चिकित्सालय एम्बुलेंस	0141-2601333
एसएमएस एम्बुलेंस	0141-2560291
रेड क्रास एम्बुलेंस	0141-2617214

एयरलाइंस

एयर अरेबिया	0141-5115455
इंडिगो एयरलाइंस	0141-5119992
एयर इंडिया सिटी	0141-2744840, 2743500
ओमान एयरवेज	0141-4002041
एयर अरेबिया	0141-2378501, 2378204
एयर इंडिया	0141-2721333, 2721519
गो एयर	0141-6500803
जेट एयरवेज	0141-5112222
स्पाइस जेट	0141-5119882

दुर्घटना थाना

ईस्ट	2587436
वेस्ट	2577717
नॉर्थ	2568721
साउथ	2575171

बच्चा अगर दूध ना पिए तो अपनाएं ये जोरदार तरीके

बच्चों के लिए दूध बहुत जरुरी होता है, क्योंकि बढ़ते हुए शिशु लिए दूध में पाये जाने वाला कैल्शियम बहुत जरुरी है। कैल्शियम से ना सिर्फ बच्चे की हड्डियों को ताक़त मिलेगी बल्कि बढ़ती उम्र के साथ वह और हृष्ट-पुष्ट रहेगा।

लेकिन जैसे जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं वह दूध पीना कम कर देते हैं या फिर बिलकुल पीते ही नहीं हैं। ऐसे में उनकी माँओं को अपने बच्चों को दूध पिलाने में काफी मशकत करनी पढ़ती है। बच्चे जैसे जैसे बड़े होते जाते हैं, वे नए स्वाद की तरफ भागते हैं और इसीलिए वे दूध से भागने लगते हैं। यह सिर्फ आपके बच्चे के साथ ही नहीं है बल्कि काफी बच्चे ऐसा करते हैं। इसलिए आज हम आपको कुछ ऐसे तरीके बताने जा रहें हैं जिसे आप अपने बच्चों को दोबारा दूध पीला सकती हैं।

फ्लेवर्ड मिल्क- कई बच्चे दूध सिर्फ इसलिए नहीं पीते हैं क्योंकि उन्हें सादे दूध का स्वाद नहीं पसंद आता है। इसलिए माता पीता को यह सलह दी जाती है कि वे अपने बच्चों को दूध में चॉकलेट या स्ट्रॉबेरी फ्लेवर मिला कर दूध पिलायें। इससे आपका बच्चा आसानी से दूध पीना शुरू कर देगा।

सुंदर गिलास -जब आपका बच्चा दूध पीने से मना करें तो उसे सुंदर और डिजाइनर गिलास में दूध देना शुरू कर दें। इससे गिलास की खूबसूरती को देख कर वह दूध पर ध्यान नहीं देगा और दूध पी लेगा।

मिल्क शेक - बच्चा अगर दूध नहीं पी रहा है तो उसमें फल मिला कर उसका मिल्कशेक बना दें। यह और भी अच्छा होगा अगर आप इन शेक्स में बच्चों के पसंदीदा फल मिलाएंगे। इसे बच्चे बहुत चाव से पीयेंगे।

खेल खेल में- हम कई बार सोचते हैं कि हम ऐसा क्या करें जिसे हमारा बच्चा अच्छे से दूध पीने लगे। उसे खेल खेल में दूध पिलाने की कोशिश करें, इसे उसका ध्यान दूध में भी नहीं होगा और वो दूध भी पी लेगा।

खेल -जब आपका बच्चा दूध ना पये तो मजेदार खेल खेलें। जैसे दूध का गिलास पहले बच्चे को दें फिर बच्चे से गिलास लेलें और दूध पीने की कोशिश करें फिर बच्चे को पीने दें।

नाश्ते से पहले दूध -अगर आप यह सोच रहीं है कि बच्चे को कैसे दूध पिलायें? हमेशा याद रखें कि जब भी बच्चा भूखा हो तो उसे नाश्ते से पहले दूध पीने को दें। इससे वह दूध पी लेगा।

यह गलतियां जो माता-पिता कर बैठते हैं

अभिभावक अक्सर बच्चों को लेकर बहुत महत्वाकांक्षी होते हैं और ऊंची अपेक्षाओं के चलते वे बच्चों पर ज्यादा बोझ डाल देते हैं। पैरेंटिंग के दौरान अमूमन माता-पिता द्वारा की जाने वाली दस गलतियों पर हम यहां नजर डाल रहे हैं, जिन्हें दूर करके वे अच्छे अभिभावक साबित हो सकते हैं।

स्वभाव के बारे में धारणा

बच्चे के 10 से 15 वर्ष की उम्र तक पहुंचने से पहले ही उसके स्वभाव को लेकर माता-पिता अपनी धारणा बना लेते हैं। वे उसे गुस्सैल, शांत, रचनात्मक या फिर एक्टिव जैसी श्रेणियों में बांटकर देखने लगते हैं। जबकि इस उम्र तक बच्चा हर चीज में बस अपना रुझान दर्शाता है। वह कुछ तय नहीं करता।

दूसरे बच्चों के साथ तुलना

अक्सर माता-पिता दूसरे बच्चों को देखकर उनकी योग्यताओं के साथ अपने बच्चे की तुलना करने लगते हैं। इस तरह वे अपने बच्चों के गुणों की उपेक्षा करते हैं और दूसरे बच्चों के गुणों को ज्यादा अच्छी नजर से देखते हैं। अपने बच्चों को कमतर समझकर वे उन्हें ज्यादा नसीहतें देने लगते हैं जो कि ठीक नहीं है।

माता-पिता मिसाल नहीं बनते

अक्सर माता-पिता खुद अलग तरह का व्यवहार करते हैं और बच्चों से अलग व्यवहार की उम्मीद करते हैं। उन्हें लगता है कि वे बच्चों को अच्छा बर्ताव सिखा सकते हैं लेकिन बच्चे जितना सुनकर सीखते हैं उससे ज्यादा वे माता-पिता को देखकर सीखते हैं। इसलिए माता-पिता को यह नहीं सोचना चाहिए कि वे चाहे जो करें लेकिन बच्चों को सिर्फ अच्छा सिखाएंगे।

बच्चों के जीवन की योजना

अक्सर माता-पिता बच्चों के इस दुनिया में आने से पहले ही उनके बारे में योजना बनाना शुरू कर देते हैं लेकिन बच्चे के गुणों के बारे में जाने बिना इस तरह की योजनाएं बच्चों का बहुत नुकसान करती हैं। माता-पिता को अपने सपने बच्चों पर लादने से बचना चाहिए।

उसकी आजादी में दखल

बच्चे अपने दोस्तों के साथ खेल में बहुत सी चीजें सीखते हैं। दोस्तों के साथ खेल से वे संघर्ष, चीजें साझा करना, गलतियों को सुधारना और अपना प्रभाव बनाना जैसी कई बातें सीखते हैं। अक्सर माता-पिता यह सोचते हैं कि बच्चे दोस्तों के साथ ज्यादा रहेंगे तो बिगड़ जाएंगे और इस तरह वे जिंदगी के जरूरी सबक सीखने से बच्चों को महरूम कर देते

बच्चों के व्यवहार से शर्म

कई बार जब बच्चे सार्वजनिक रूप से कोई ऐसा व्यवहार करते हैं जिससे माता-पिता को शर्म आए तो वे बच्चों पर नाराज हो जाते हैं। जैसे अगर बच्चे ने किसी शॉपिंग स्टोर में पेशाब कर दी तो माता-पिता को बहुत शर्म आती है और वे बच्चे को डांटने लगते हैं लेकिन अगर ऐसे समय वे बच्चे को प्यार से समझाएं तो बच्चे उस बात को जल्दी सीखते हैं। डांटना समस्या का हल नहीं है।

बच्चे की गलती को छुपाना

कई माता-पिता बच्चे पर गलत असर न हो इसके लिए उसकी गलतियों को भी नजरअंदाज करते हैं लेकिन ऐसा करके वे बच्चे को कभी सही और गलत के बीच का अंतर महसूस नहीं होने देते। बच्चे के गलत बर्ताव पर उसे बताना कि उसने क्या गलत किया है बहुत ही जरूरी है। गलतियां छुपाने से वह कभी नहीं सीखेगा।

अजनबियों से प्यार जताना

कई माता-पिता बच्चों को यह भी सिखाते हैं कि बेटा अंकल से हैंडशेक करो या आंटी से हैंडशैक करो। दूर के किसी परिचित या रिश्तेदार के सामने बच्चे को इस तरह की असुविधाजनक स्थिति में डालना बिल्कुल भी ठीक नहीं है। बच्चे को नमस्ते करना सिखाएं जो कि उनके लिए ज्यादा ठीक रहेगा। टच से उसे दूर रखें।

अपनी गलतियां बच्चों के सिर

अक्सर माता-पिता अपनी गलतियां बच्चों के सिर मढ़ देते हैं। जैसे कुछ माता-पिता कहते हैं कि उन्हें उनके बेटे की हरकतों ने ही गुस्सा दिलाया। क्या छोटे बच्चे आपका गुस्से में चिल्लाना बर्दाश्त कर सकते हैं? शायद नहीं। इसलिए बच्चों पर चिल्लाने से बचें।

बच्चों की सफलता का जश्न

जब माता-पिता बच्चों की सफलता पर बहुत ज्यादा गर्व करने लगते हैं या उसे ही अपनी सफलता मानने लगते हैं तो बच्चों की जरा सी भी गलती उन्हें परेशान या बेचैन कर देती है। उस स्थिति में वे खुद को असफल महूसस करते हैं इसलिए बच्चों की सफलता और असफलता को ठीक से संभालना जरूरी है।

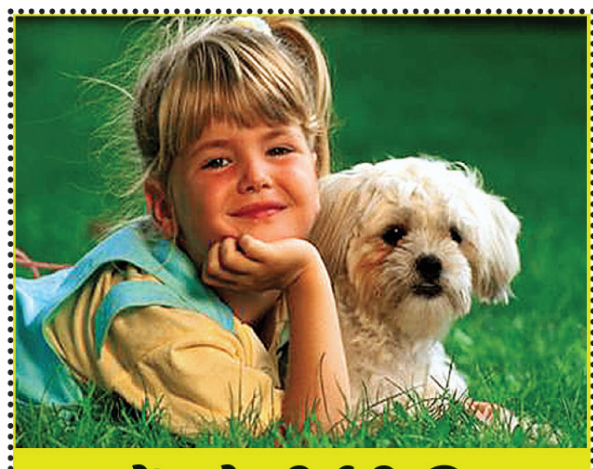

बच्चों को पीईटी गिफ्ट करने के हैं कई कारण

बहुत से पेरेंट्स अपने बच्चे की घर पर पेट लाने की जिद से परेशान रहते हैं। दरअसल पेट पालने के चैलेंजेस इतने हैं कि आप इस जिद को खारिज कर देते हैं। पेट पालने के बहुत से फायदे भी हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। चाहे आप बिल्ली पालें या कुत्ता या फिर मछली या खरगोश, इन फायदों पर एक नजर जरूर डालें।

पेट पालने के साथ ही आपके बच्चे में जिम्मेदारी के भाव भी आ जाते हैं। ये छोटी जिम्मेदारियां ही होंगी जैसे कटोरे में पानी है या नहीं, या एक तय समय पर उन्हें खाना देना। बहुत से छोटे काम होते हैं जो आपके बच्चे करना एन्जॉय करेंगे। लेकिन ये बात बच्चों को समझानी भी पड़ेगी की पेट पालने के बाद उनके काम बढ़ेंगे। इसके लिए एक ट्रायल पीरियड भी रख सकते हैं। शुरूआत में बच्चे की हेल्प करें जिससे वो अपने पालतू के काम ठीक से कर सकें। इस तरह बच्चा कॉन्फिडेंट बनेगा और खुद काम करना शुरू करेगा।

चाहे आपके एक बच्चा हो या दो, एक पेट उसका इंस्टेंट प्लेमेट बन जाएगा। डॉग्स और कैट्स खासकर बेहद अच्छे पेट साबित होते हैं। हालांकि पेट लेते समय इस बात की तसल्ली कर लें कि उसका स्वभाव फ्रेंडली है या नहीं। पेट के टेम्परामेंट को समझना बहुत जरूरी है।

आपका बच्चा अपने पेट के साथ न केवल खेलेगा बल्कि पढ़ेगा भी। पेट किसी भी बच्चे के लिए एक बेहतरीन %साउंडिंग बोर्ड% साबित होगा। खासकर जो बच्चा पढ़ने की शुरुआत ही कर रहा हो। यूएस के स्कूलों में तो मॉडल डॉग्स इसलिए बने जाते हैं कि बच्चा उसके सामने रीडिंग कर सके। इस तरह बच्चे को पढ़ने में मजा आने लगता है।

बहुत से एडल्ट्स भी अपना अकेलापन दूर करने के लिए पेट्स पालते हैं। ठीक इसी तरह से बच्चों के लिए भी पेट अच्छे कम्पेनियन साबित होते हैं। बच्चों में स्ट्रेस और एंग्जाइटी लेवल इन पेट्स के साथ कम हो जाते हैं। शोध बताते हैं कि एनिमल-असिस्टेड थैरेपी से डिप्रेशन नहीं होता है। आपका बच्चा और उसका पेट समय के साथ एक अटूट रिश्ता कायम कर लेते हैं।

पेट पालने के साथ ही बच्चे का इमोशनल डेवलपमेंट भी होता है। आपके बच्चे के सोशल स्किल्स में गजब का निखार आएगा। सेल्फ-एस्टीम बूस्ट होगी। ऐसा इसलिए होता है कि ये पेट्स बच्चों को अनकंडीशनल लव देते हैं।

जिस तरह छोटे भाई-बहन के घर में होने से बच्चा केयर करना सीखता है, उसी तरह पेट के साथ भी बच्चे आसपास वालों के लिए ज्यादा केयरिंग होने लगते हैं। बचपन में पेट पालने से बड़े होकर वही बच्चा ज्यादा बेहतर और केयरिंग पिता साबित होगा।

पेट के पालने से बच्चे की फिजिकल एक्टिविटी बढ़ जाती है। खासकर जब पेट डॉग या कैट हो तब। इनके साथ भाग-दौड़ करके बच्चे ज्यादा चुस्त बने रहते हैं। आज के गैजेट वर्ल्ड में अगर बच्चा पेट पालता है तो एक तरह से वह खुद को ज्यादा आउटडोर एक्टिविटीज के लिए तैयार करता है।

जानकर हैरानी होगी कि शोध बताते हैं पेट पालने से आपके बच्चे को फालतू की एलर्जी नहीं होगी। अस्थमा जैसी बीमारियां भी नहीं होंगी। इसके अलावा रेस्पिरेटरी प्रॉब्लम्स, लो-ब्लडप्रेशर, कोलेस्ट्रोल लेवल सब बढ़िया रहेगा। घर में पेट पालने की इससे बेहतर वजह क्या हो सकती है भला...!

क्या प्लास्टिक की बोतल आपके शिशु के लिए हनिकारक हैं?

पानी तो हो जाएं सावधान प्लास्टिक की बोतल में रासायनिक द्रव्य की कोटिंग होती है। बोतल में गर्म दूध डालने पर यह रसायन दूध में मिलकर बच्चे के शरीर में पहुंचकर नुकसान पहुंचाता है। वैसे तो गिलास की बोतल के अपने नुक्सान हैं। जैसे यह वजन में भारी होती हैं और ज़मीन पर गिर ने तुरंत टूट जारी हैं। ये जोरदार तरीके आईये कांच की बोतल को इस्तेमाल करने के फायदे और नुक्सान जानते हैं।

बच्चे के लिए कांच की बोतल अच्छी है या प्लास्टिक की ? तो जवाब है हाँ प्लास्टिक की बोतल में बिस्फेनॉल नमक रसायन पाया जाता है जो दिमाग को कमज़ोर बनता है और इंसान की प्रजनन प्रणाली को भी नुक्सान पहुँचता है। जब आप प्लास्टिक की बोतल में कुछ गर्म डालते हैं तो यह रसायन उस खाने में मिल कर आपके शरीर में चला जाता है। कांच की बोतलों के फायदे कांच में किसी भी तरह का कोई भी रसायन नहीं पाया जाता है, ना कोई पेट्रोलियम उत्पादन का इस्तेमाल होता है इसे बनाने में, और इन्हे रीसायकल भी किया जा सकता है।

पहले हम बच्चे को सिर्फ स्टील या कांच की बोतल में ही दूध पिलाते थे, लेकिन आज बाज़ार में कई सारे विकल्प मौजूद हैं। जिसके चलते हम कई बार यह सोचते हैं कि हम अपने छोटे से बच्चे को प्लास्टिक की बोतल में दूध पिलायें या कांच की बोतल में, लेकिन अगर आप अपने नन्हें मुन्नों को प्लास्टिक की बोतल से दूध पिलाते हैं तो सावधान हो जाएं।

कांच की बोतल को गर्म करने पर किसी भी तरह का अवशोषण नहीं होता है। इन्हे आप अच्छे से साफ़ कर सकते हैं और इसमें दूध लंबे समय तक गर्म रखा जा सकता है। कांच की बोतलों के कुछ नुकसान कांच की बोतल काफी भरी होती हैं और आसानी से टूट जाती हैं। ये प्लास्टिक की बोत्तल से महंगी होती हैं। इनकी ज्यादा केयर करनी पड़ती है।

पीरियड्स के बारे में बेटी को ऐसे बताएं

पीरियड्स यानि मासिक चक्र एक नैचुरल प्रक्रिया है जिससे हर लड़की को गुजरना पड़ता है लेकिन आज भी इस बारे में खुले में बात करने पर लोग हिचकिचाते हैं।

पीरियड्स से जुड़े ऐसे कई मिथ हैं जो सालों से चले आ रहे हैं। इन्हीं मिथ्स की वजह से हमारी बेटियों को कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

यह मां की जिम्मेदारी हो जाती है कि वह अपनी बेटी को इन परेशानियों से बचाए और इस सामान्य प्रक्रिया के बारे में उन्हें खुलकर समझाएं। अगर आप की बेटी की मां तो आपको भी इन बातों के बारे में जानने की जरूरत है।

क्या आपको इस बात की चिंता है कि आप अपनी बेटी को पीरियड्स के बारे में कैसे बताएंगी तो ये टिप्स आपके लिए मददगार साबित हो सकते हैं।

टीवी और एड की मदद से

टीवी पर जब सैनेटरी नैपकीन की एड आती है तो नजरअंदाज न करें बल्कि इसे पूरा देखें और अगर बेटी इसके बारे में आपसे कोई सवाल पूछे तो उसे सही तरीके से समझाएं। इसी तरह पेपर में भी कई बार विज्ञापन छपकर आते हैं।

पेपर छिपाने के बजाय अपनी बेटी को बेटी शर्म करती है तो आप आगे आएं

आपकी बेटी को पीरियड्स के बारे में किसी और से पता चले इससे अच्छा है कि आप पहले ही उसे थोड़ी थोड़ी जानकारी देते रहे। ऐसे करने से वह किसी गलत सोच में नहीं पड़ेगी। साथ ही में वह इस स्थिति में खुद को आसानी से हैंडल कर पाएगी।

बेटी को पूरी सच्चाई बताएं

बेटी बड़ी हो रही है तो उसके शरीर में बहुत सारे बदलाव आने शुरू हो जाते हैं, जिनके बारे में वह खुद से एहसास करने लगती है। ऐसे में पीरियड्स के बारे में उससे झूठ बोलना गलत होगा। उसे पीरियड्स के बारे में सारी बातें सच-सच बता दें। उसे ये समझाने की कोशिश करें कि ये एक नैचुरल प्रक्रिया है, जिससे हर महिला गुजरती है। उसे नैपकीन इस्तेमाल करने, डिस्पोज करने और साफ-सफाई से जुड़ी वो सारी बातें बताइए जो उसके लिए जरूरी हैं।

कहीं आपकी गलतियों से तो नहीं हो रहे बच्चे के दांत खराब!

दांतों में कैविटी होने के कई कारण होते हैं। जैसे कि स्ट्रीट फुड़ और जंक फूड़ खाने से दातों में कैविटी होने का खतरा ज्यादा होता है। कैविटी के कारण दांत कमज़ोर हो जाते हैं, जिससे कई प्रकार की समस्यायाओं का सामना करना पड़ता है। आइए, हम आपको इस समस्या पर आधारित एक कहानी सुनाते हैं।

एक दिन एंजेला अपने बेटे को लेकर डेंटिस्ट के पास गई। उसके बेटे का नाम फिन था। उसको पूरा विश्वास था कि उसके बेटे को दांतों से जुड़ी कोई समस्या नहीं होगी।एक जिम्मेदार मां की भांति वह अपने बच्चों की सेहत के प्रति हमेशा ही सावधान रहती थी। वह अपने बच्चों के दातों का पूरा ध्यान रखती थी और खाने-पीने वाली हर उस चीज से दूर रखती थी, जो उन्हें नुकसान पहुंचा सकते हैं। परन्तु जब डेंटिस्ट ने एंजेला को यह बताया कि फिन के दूध के दांतों में कैविटी है, तो यह सुनकर वह हैरान रह गई।

डेंटिस्ट ने बताया कि इस कैविटी को बने करीब छह महीने हो चुके हैं। एंजेला बताती हैं कि जब उसे इस बात का पता चला कि उसके बेटे के दांतों में कैविटी है, तो यह सुनकर उसे ऐसा लगा जैसे वो दुनिया की सबसे बुरी मां है। लेकिन उस समय भी उसे यह नहीं पता चल पाया कि उसके बेटे को यह त?कलीफ हो कैसे गई है। एंजेला के अनुसार उसके बच्चे न तो बहुत अधिक जंक फूड खाते थे और न ही कुछ मीठा खाने के पश्चात बिना मुंह धोए रहते थे। तो यह कैसै हुआ? ब्रिटिश डेंटल एसोसिएशन के साइंटिफिक एडवाइजर प्रोफेसर डेमीन वॉलम्स्ले का कहना है कि आजकल के बच्चों में कैविटी होने का खतरा बहुत अधिक इसलिए होता है क्योंकि बच्चे स्नैक्स को लेकर कुछ ज्यादा ही उत्साही होते हैं।

जिसमें बहुत अधिक मात्रा में कैविटी होती है। शोधकर्ता मानते हैं कि कई बार माता-पिता की जरूरत से ज्यादा देखभाल की वजह से भी बच्चों के दांत खराब हो जाते हैं। बच्चों के दांतों के प्रभावित होने के दो कारण हैं। एक तो वे पदार्थ जिनको खाने से अम्लीयता होती है और दूसरा वे पदार्थ जिनमें शुगर होती है। अम्लीय खाद्य पदार्थ दांतों की इनेमल को नष्ट कर देता है और शुगर बैकटीरिया को जन्म देता है। एंजेला के मामले में भी यही हुआ था, एंजेला अपने बच्चों को पौष्टिक आहार देने के चक्कर में जूस, हनी-ग्रेन दिया करती थी, वह अपने बच्चों को रात को सोते समय दूध पिलाकर सुलाती थी, उसे यह लगता था कि कैल्शियम उसके बच्चों के लिए बहुत अच्छा है, लेकिन रात के संमय इसमें मौजूद लेक्टोज दांतों को नुकसान पहुंचाते हैं, यह बात इसे नहीं पता थी।

प्रत्याशी के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं : पायलट

सफल राजस्थान

जयपुर। देश के आम चुनावों के दौरान पिछले कुछ दिनों से केन्द्र में काबिज सत्तारूढ़ दल के द्वारा जिस प्रकार का हिंसा का माहौल बनाया गया है और जैसी अभद्र भाषा का इस्तेमाल किया जा रहा है, वह घोर निन्दनीय है और लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिये खतरा है। भोपाल से भाजपा की लोकसभा प्रत्याशी प्रज्ञा ठाकुर ने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को राष्ट्रभक्त बताकर सभी मर्यादायें पार कर ली है लेकिन सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि भाजपा के किसी भी जिम्मेदार नेता ने इस बयान पर ना तो खेद व्यक्त किया है और ना ही अपने प्रत्याशी के विरूद्ध कोई कार्यवाही की है।

उक्त विचार राज्य के उप मुख्यमंत्री एवं राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सचिन पायलट ने आज प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय, जयपुर पर आयोजित प्रेसवार्ता को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा ने भोपाल लोकसभा क्षेत्र से प्रज्ञा ठाकुर को जमानत पर रिहा बताकर टिकट दिया, किन्तु भाजपा प्रत्याशी ने चुनाव प्रचार के दौरान देश की रक्षा के लिये शहीद हुए हेमंत करकरे को श्राप देना बताकर उनकी शहादत का अपमान किया तथा अब राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के हत्यारे का महिमामण्डन किया गया है जो निन्दनीय है। उन्होंने कहा कि भाजपा के नेता यदि अपनी प्रत्याशी के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं कर सकते, उसके कृत्यों की भर्त्सना नहीं सकते तो उन्हें राष्ट्रवाद की बात करने का कोई अधिकार नहीं है।

उन्होंने कहा कि भाजपा का छदम् राष्ट्रवाद उजागर हो गया है। पायलट ने कहा कि पश्चिम बंगाल में कलकत्ता में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह के रोड शौ के दौरान हुई हिंसक घटनाओं के लिये जो तत्व जिम्मेदार हैं उसका प्रमाण आज देश के पास मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि हिंसक घटनाओं में ईश्वरचंद विद्यासागर जी की मूर्ति तोड़ने की घटना की कांग्रेस पार्टी कड़े शब्दों में निन्दा करती है। उन्होंने कहा कि कलकत्ता की हिंसक घटनाओं के लिये भाजपा के द्वारा रोड शौ करने हेतु बंगाल के बाहर से बुलाये गये कार्यकर्ताओं की भीड़ जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि घटना की सम्पूर्ण जानकारी होने के बावजूद प्रधानमंत्री द्वारा टीएमसी के नेताओं व कार्यकर्ताओं की तुलना कश्मीर के पत्थरबाजों से की गई जो दुर्भाग्यपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि देश के प्रधानमंत्री ने गैर जिम्मेदाराना तरीके से चुने हुये मुख्यमंत्री की तुलना अलगाववादियों से की है जो खेदपूर्ण है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री बंगाल में जाकर चुनी हुई सरकार को चुनौती देते हैं कि टीएमसी के 40 विधायक प्रधानमंत्री के सम्पर्क में है तथा चुनाव पश्चात् रा%य सरकार खतरे में आ जायेगी, किन्तु इस प्रकार के बयानों पर देश के निर्वाचन आयोग जिससे निष्पक्षता की अपेक्षा की जाती है, प्रधानमंत्री के खिलाफ प्रसंज्ञान लेकर कोई कार्यवाही नहीं कर रहा है जिससे चुनाव आयोग की प्रतिबद्धता पर सवाल उठ रहे हैं।

उन्होंने कहा कि बंगाल में चुनावों की हिंसा को देखते हुए चुनाव आयोग ने पहली बार बंगाल में नीयत समय से पहले चुनाव प्रचार बंद करने का निर्णय लिया, किन्तु चुनाव प्रचार बंद करने का समय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की बंगाल में आयोजित होने वाली दो रैलियों को ध्यान में रखते हुये किया गया जिसने चुनाव आयोग की निष्पक्षता को कटघरे में खड़ा कर दिया है।

यदि बंगाल चुनाव में वास्तव में हिंसा की आशंका थी तो तत्काल प्रभाव से चुनाव प्रचार पर रोक लगाई जानी चाहिए थी, किन्तु प्रधानमंत्री की रैलियों का आयोजन होने के पश्चात् चुनाव प्रचार पर रोक लगाने के निर्णय से चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। उन्होंने कहा कि भाजपा के नेता कलकत्ता में भाजपा के रोड शौ के दौरान हुई हिंसा का मुद्दा उठा रहे हैं, किन्तु उत्तर प्रदेश में रायबरेली से कांग्रेस विधायक पर जो जानलेवा हमला हुआ उसकी निन्दा भाजपा के किसी नेता ने नहीं की। भाजपा के नेता अपनी सुविधा के अनुसार हिंसक घटनाओं पर टिप्पणी करते हैं जिससे भाजपा का वास्तविक चरित्र जनता के समक्ष उजागर हो गया है। उन्होंने कहा कि राजनीति में हिंसा का कोई स्थान नहीं है और जो भी हिंसा को बढ़ावा देते हैं उनके खिलाफ तत्काल कार्यवाही की जानी चाहिये।

पायलट ने कहा कि देश की जनता जान गई है कि आज हमारा देश किसके हाथों में सुरक्षित है और किसके हाथों में असुरक्षित है। उन्होंने कहा कि आम चुनावों में भाजपा का पतन निश्चित है क्योंकि दक्षिण भारत में भाजपा का खाता तक नहीं खुलेगा और इसके साथ ही उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, बिहार सहित अधिकांश राज्यों में भाजपा को करारी शिकस्त मिलेगी और यही वजह है कि भाजपा के नेता बौखला गये हैं और अराजकता को अंजाम दे रहे हैं।

उन्होंने कहा कि भाजपा के कुछ राष्ट्रीय स्तर के नेताओं के सोश्यल मीडिया एकाउंट को देखा जाये तो स्पष्ट हो जायेगा कि भाजपा ने कलकत्ता में रोड शौ किया था उसका एकमात्र उद्देश्य ध्रुवीकरण की राजनीति को बढ़ावा देना था। यह सारे तथ्य सोश्यल मीडिया पर उपलब्ध है, परन्तु निर्वाचन आयोग द्वारा इन तथ्यों की अनदेखी की जा रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी महिला सुरक्षा के प्रति संकल्पबद्ध है और उत्पीड़न के मामलों में न्याय दिलवाने के लिये हर स्तर पर तत्पर है।

उन्होंने कहा कि 23 मई के पश्चात् केन्द्र से भाजपा सरकार की विदाई तय है तथा कांग्रेस के नेतृत्व में सरकार का गठन होगा। प्रेस कांग्रेस में सचिन पायलट के साथ मीडिया चेयरपर्सन अर्चना शर्मा, प्रवक्ता सुरेश चौथरी, प्रताप सिंह खाचरियावास सहित अन्य उपस्थित रहे।

प्रभात फेरी परिवार ने किया 'हरे रामा-हरे कृष्णा' सत्संग, फूलों की होली खेली

महोत्सव का समापन

सफल राजस्थान

झुंझुनूं। बड़ का बालाजी मंदिर सुंदरकांड परिवार की ओर से शहर के वार्ड 36 स्थित बड़ का बालाजी मंदिर चौक में चार दिवसीय धार्मिक आयोजन का समापन शनिवार को हो गया। महोत्सव के अंतिम दिन दोपहर चार बजे पंडित रोहित पुजारी के आचार्यत्व में हवन हुआ। इसमें सात जोड़ों सहित परिवार सदस्यों ने भी आहुतियां दी। इसके बाद बजरंग बली की ज्योत लेकर प्रभात फेरी परिवार की ओर से 'हरे रामा-हरे कृष्णा' सत्संग किया गया।

दादूद्वारा बगड़ के महामंडलेश्वर अर्जुनदास महाराज के सानिध्य में सत्संग के दौरान प्रभात फेरी व परिवार के सदस्यों ने 21 किलो फूलों से होली भी खेली। महोत्सव के दौरान बजरंग बली का दरबार व मंदिर परिसर की भव्य सजावट की गई। रात को प्रसाद का आयोजन किया गया। परिवार को सुरेंद्र कुमार चारणवासिया व पवन व्यास ने बताया कि परिवार की ओर से नियमित रूप से पूर्णिमा के दिन संगीतमय सुंदरकांड का पाठ किया जाता है। वैशाख पूर्णिमा पर 111वें पाठ के अवसर पर चार दिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। शनिवार रात भजनों का कार्यक्रम हुआ।

चंचलनाथ टीले के पीठाधीश्वर ओमनाथ महाराज व विचारनाथ महाराज के सानिध्य में रमेश व्यास, सज्जन दाधीच, सुशील केडिया, मनीष भाटी, पंकज, अनिल बाक्याण, शुभकरण चोपदार, विनोद वर्मा, राकेश बावलिया, रजत मंडावा, दिनेश हिसारिया आदि कलाकारों ने भजनों की प्रस्तुति दी। इस दौरान मांगीलाल सैनी, महेश शर्मा, अभिषेक टेलर, लक्की टेलर, रविकांत बंका, विवेक शर्मा, विवेक शर्मा, गौरव व्यास, लोकेश शुक्ला आदि मौजूद थे।

महोत्सव के अंतिम दिन सात जोड़ों सहित परिवार के सदस्यों ने दी हवन में आहुतियां

खातियों की ढाणी स्थित शिव मंदिर में शिव परिवार की मूर्तियों की स्थापना की गई। इससे पहले महिलाओं ने कलश यात्रा निकाली। दाऊधाम कालाकोट (टोडा) के संत बलदेव दास महाराज के सानिध्य में पूजा कर कलश यात्रा रवाना हुई। डीजे के साथ रवाना हुई कलश यात्रा में भक्त नाचते हुए तथा महिलाएं मंगल गीत गाती चल रही थी। कलश यात्रा का जगह-जगह स्वागत किया गया। इस दौरान शिव परिवार की प्रतिमाओं को भी नगर भ्रमण करवाया गया। इसके बाद वेद मंत्रोच्चारण के साथ मूर्तियों की स्थापना की गई। आयोजक बंशीधर जांगिड़ ने बताया कि इससे पहले हवन हुआ। जिसमें भक्तों ने आहुतियां दी। मूर्ति स्थापना के बाद भंडारे हुआ। इस दौरान रोशन लाल वर्मा, किशोर सिंह जांगिड़, बाबूलाल, कमला देवी, संतोष, नानची देवी, सावत्री, नाथी, सविता आिद मौजूद थे।

हेरिटेज इमारतों को बिना छेड़े कैसे हटाएंगे अवैध निर्माण

सफल राजस्थान

जयपुर। हाईकोर्ट ने नगर निगम को परकोटे की हेरिटेज इमारतों से छेड़छाड़ कर बिना अनुमति बनी इमारतों को हटाने का एक्शन प्लान पेश करने का निर्देश दिया है। साथ ही अदालत ने छह सप्ताह में सर्वे कर बिना अनुमति हुए निर्माणों की सूची तैयार करने को कहा है। वहीं अदालत ने स्वायत्त शासन सचिव को मामले में मॉनिटरिंग कर रिपोर्ट पेश करने को कहा है। मुख्य न्यायाधीश एस रविन्द्र भट्ट और न्यायाधीश प्रकाश गुप्ता की खंडपीठ ने यह आदेश स्वप्रेरित प्रसंज्ञान पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने नगर निगम को कहा है कि एक्शन प्लान को तीन भागों में तैयार किया जाए। पहले भाग में उन अवैध निर्माणों को शामिल किया जाए, जिनसे हेरिटेज को सबसे अधिक नुकसान हुआ है। वहीं दूसरे और तीसरे भाग में हेरिटेज को कम प्रभावित करने वाले अवैध निर्माणों को रखा जाए। अदालत ने एक्शन प्लान में यह भी बताने को कहा है कि इन अवैध निर्माण को कब तक हटा दिया जाएगा। सुनवाई के दौरान न्यायमित्र शोभित तिवाड़ी ने कहा कि 4 अप्रैल को नगर निगम ने हाईकोर्ट में शपथ पत्र पेश कर वर्ष 2008 से वर्ष 2019 तक चारदीवारी में व्यावसायिक निर्माण की अनुमति नहीं देने की जानकारी दी है। जबकि यहां धडल्ले से व्यावसायिक निर्माण हो रहे हैं। जिसके चलते हेरिटेज को भी नुकसान पहुंच रहा है। कोर्ट ने इसके लिए निगम को नोटिस जारी किया है।

मौसम : 15 जून को प्रदेश की सीमा छुएगा मॉनसून, प्रवेश 1 जुलाई को करेगा

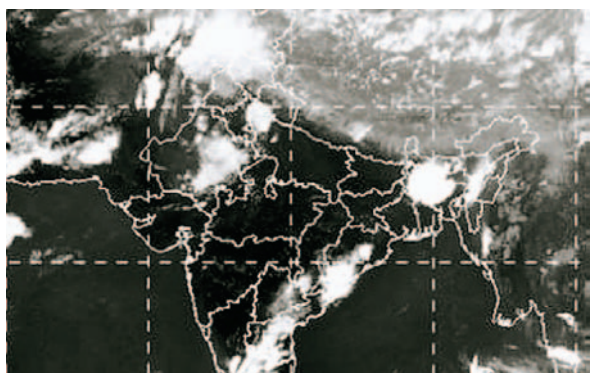

सफल राजस्थान

जयपुर। केरल तट पर 6 जून को एंट्री के बाद दक्षिणी-पश्चिमी मानसून करीब 24 दिन बाद राजस्थान में प्रवेश करेगा। मौसम विभाग की मानें तो 15 जून को प्रदेश की सीमा को मानसून छुएगा, लेकिन इसका प्रवेश करीब 15 दिन बाद 1 जुलाई को होगा। इसके बाद 15 जुलाई तक मॉनसून पूरे प्रदेश को कवर कर लेगा।

मौसम विभाग डायरेक्टर शिव गणेश ने बताया कि प्रदेश में इस बार मॉनूसन 4 से 5 दिन की देरी से प्रवेश करेगा। यह अरब सागर से कच्छ, उत्तरी गुजरात होते हुए उदयपुर व झालावाड़ वाले हिस्से को छूता हुआ मध्यप्रदेश के उत्तरी व पूर्वी भागों को कवर करते हुए पूर्वी उत्तरप्रदेश में प्रवेश करेगा। इस दौरान प्रदेश के दक्षिणी हिस्से उदयपुर, सिरोही में बारिश होगी। इसके बाद 1 जुलाई को मॉनसून उदयपुर और झालावाड़ के रास्ते प्रवेश करेगा।

आंधी-बारिश के आसार

प्रदेश में रविवार को एक-दो जिलों को छोड़कर ज्यादातर इलाकों में आंधी-अंधड़ से राहत मिली। हालांकि, मौसम विभाग ने अगले तीन दिन में फिर से आंधी, बारिश का अलर्ट जारी किया है। रविवार को ज्यादातर शहरों में तापमान 37 से 40 डिग्री से नीचे रहा। पूर्वी राजस्थान में एक-दो जगह और बाड़मेर में बूंदाबांदी हुई। जयपुर में मौसम साफ रहा। यहां दिन का पारा 38.8 डिग्री रहा।

रात का तापमान 3 से 7 डिग्री तक बढ़ा

मंगलवार को पश्चिमी राजस्थान में आंधी-बारिश की चेतावनी

सफल राजस्थान

__जयपुर।__ राजस्थान में गर्मी का दौर जारी है। प्रदेश में सोमवार को कहीं भी आंधी-तूफान-बारिश की चेतावनी नहीं है। हालांकि मौसम विभाग की मानें तो मंगलवार से फिर मौसम पलटी मारेगा। पश्चिमी राजस्थान के बीकानेर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, जोधपुर, श्रीगंगानगर में आंधी-बारिश व बादल गरजने की चेतावनी जारी की गई है। यहां 30 से 40 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चल सकती हैं। मौसम का यह मिजाज यहां गुरुवार तक जारी रहेगा। वहीं मंगलवार को पूर्वी राजस्थान में कहीं भी आंधी-तूफान की चेतावनी नहीं है। जयपुर में सुबह 10 बजे तापमान 36.0 डिग्री रहा। बीती रात सबसे गर्म रहे फलौदी में सुबह 10 बजे पारा 33 डिग्री रहा। बीती रात तापमान में 3 से सात डिग्री की बढ़ोतरी दर्ज की गई। बीती रात सबसे ज्यादा तापमान फलौदी में 31.0 डिग्री रहा। बीकानेर और अजमेर में तापमान 28.5 डिग्री रहा। बीती रात अजमेर में पारा करीब 4 डिग्री बढ़त के साथ 28.5 डिग्री पर पहुंच गया। अलवर में भी तापमान में दो डिग्री की बढ़त रही। बीती रात यहां पारा 24.0 डिग्री रहा। जयपुर में करीब 3 डिग्री की बढ़त के साथ पारा 27.2 डिग्री पर पहुंच गया। वहीं सबसे ज्यादा बढ़ोतरी फलौदी में रही। यहां एक रात पहले पारा 24.6 डिग्री था जो बीती रात 7 डिग्री बढ़कर 31.0 डिग्री हो गया।

जयपुर : रेलवे स्टेशन चला रहीं महिलाएं

यूएन ने तारीफ में कहा- सशक्त बनाने वाला कदम

सफल राजस्थान

जयपुर। जयपुर से दिल्ली के रास्ते में एक छोटा सा साफ सुथरा रेलवे स्टेशन है गांधीनगर। कहने को तो यह स्टेशन देश के बाकी रेलवे स्टेशन जैसा ही है, लेकिन एक कारण है, जिसकी वजह से यह स्टेशन दुनिया में अपनी तरह का पहला स्टेशन है। यह मुख्य लाइन का पहला स्टेशन है, जिसे केवल महिलाओं द्वारा संचालित किया जाता है और हाल ही में संयुक्त राष्ट्र ने महिलाओं के सशक्तीकरण की दिशा में इसे एक मील का पत्थर बताया है। टोंक रोड पर जयपुर-दिल्ली लाइन पर स्थित इस स्टेशन से दिनभर रेलगाड़ियां गुजरती हैं और यहां आने वाले और यहां से जाने वाले लोग हरी झंडी दिखाने वाले गार्ड से लेकर टिकट चेकर और सफाई कर्मियों के रूप में महिलाओं को देखकर हैरान भी होते हैं और खुश भी। टिकट खिड़कियों पर भी रेलवे की सफेद पोशाक पर गहरे नीले रंग का कोट पहने महिलाएं पूरी मुस्तैदी से अपना काम करते दिखाई देती हैं।

स्व. उस्ताद चौथमल पहलवान आखाड़े के नये उस्तादो और खलिफाओं को पगड़ी दस्तूर कार्यक्रम में पदवी दी गई

सफल राजस्थान

कोटा। कोटा के सबसे पुराने आखाड़े स्व. उस्ताद चौथमल पहलवान आखाड़े के गुरु उस्ताद बालकिशन बरथुनिया व प्रवत्ता विपिन बरथुनिया ने बताया कि गुरू द्रोणाचार्य स्व. उस्ताद चौथमल पहलवान अखाड़े की बरसो की परंपरा का निर्वहन करते हुए 31 वर्ष बाद आज दोबारा दोहराया गया । 31 वर्ष पहले गुरू द्रोणाचार्य स्व. उस्ताद चौथमल पहलवान और गुरु मुक्तानंद जी महाराज द्वारा बालकिशन बरथुनिया जी को उस्ताद की उपाधि दी गई थी जिसके चलते आज गुरु उस्ताद बालकिशन बरथुनिया जी ने उस्ताद की उपाधि नन्दकिशोर बरथुनिया, राजेन्द्र माचलीवाल और गोपाल सोनी और खलिफा की उपाधि हेमंत सुमन और शशि कुमार को दी। पगड़ी दस्तुर कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया जिसमें पूरे हाड़ौति के आखाड़ो के उस्ताद और खलिफाओं ने शिरकत की।

जिनका साफा बांधकर, माला पहनाकर, और नारियल भेंटकर स्वागत किया गया। पगड़ी दस्तूर कार्यक्रम में मुख्य अतिथी सनातन पूरी जी महाराज, विशिष्ट अतिथी जिला कुश्जी संघ के अध्यक्ष इंद्र कुमार दत्ता और कार्यक्रम की अध्यक्षता शलेन्द्र भार्गव गोदावरी धाम द्वारा की गई। साथ ही उस्ताद चौथमल पहलवान आखाड़ा छोटी समाध व्यायामशाला के संरक्षक पद पर गुरु उस्ताद बालकिशन बरथुनिया जी आजीवन तक रहेंगे। उपरोक्त तीनो नये उस्तादों और खलिफाओं का गुरु उस्ताद और अतिथियों ने पगड़ी पहनाकर पदभार ग्रहण कराया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथी गुरु सनातन ती महाराज ने तीनो नव उस्तादो और खलिफाओं को आशीष देते हुए कहा कि गुरू द्रोणाचार्य स्व. उस्ताद चौथमल पहलवान जी के आखाड़े की परम्परा को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी का निर्वहन पूरे विवेक और सामर्थ्य के साथ करना और समाज में नयी पहचान बनाना हम सबका कर्त्तव्य है।

अध्यक्षता कर रहे शलेन्द्र भार्गव जी ने पूरे हाड़ौति की शान गुरू द्रोणाचार्य स्व. उस्ताद चौथमल पहलवान जी के आखाड़ा पूरे भारत में जाना पहचाना नाम है और आखाड़े के पहलवानो ने समय समय पर पूरे भारत में कुश्ती प्रतियोगिता में अपना कौशल बखुबी दिखाया है। विशिष्ट अतिथी इंद्र कुमार दत्ता ने कहा कि गुरू द्रोणाचार्य स्व. उस्ताद चौथमल आखाड़े से समय समय पर जो पहलवानो का कुश्जी का कौशल देखने को मिलता है वो काबिले तारिफ है। इस अवसर पर गोविन्द शर्मा, नाथूलाल जी पहलवान, महेश आहुजा, अमित सूद, अरुण भार्गव, प्रदीप जोशी, किशन पहलवान, सूरेन्द्र पराशर, प्रहलाद जी गुर्जर, संजय शर्मा, नवीन शर्मा, राधावल्लभ शर्मा, प्रीतम बरथुनिया, रवि बरथुनिया, बजरंग लाल सुमन, जगदीश सुमन राजेश सक्सेना, राजेन्द्र सुमन, योगेन्द्र गुप्ता आदि कोंटा के गणमान्य जन उपस्थित रहे।

एनएचएम के तहत संविधा पर लगेंगे 2500 कम्यूनिटी हेल्थ ऑफिसर

सफल राजस्थान

जयपुर। प्रदेश के सब हेल्थ सेन्टर व वेलनेस सेन्टरों पर नेशनल हैल्थ मिशन के अंतर्गत संविदा पर 2500 कम्यूनिटी हेल्थ ऑफिसर के पदों पर भर्ती होगी। संविदा पद के लिए आयोजित भर्ती परीक्षा में सफल रहने के बाद सफल अभ्यर्थियों को 6 माह का (सामुदायिक स्वास्थ्य विषय) पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से ब्रिज कोर्स करवाया जाएगा। कोर्स में सफल रहने वाले अभ्यर्थियों को चिंहित सब हेल्थ सेन्टर व वेलनेस सेन्टरों पर संविदा पर नियुक्ति मिलेगी। मिशन निदेशक (नेशनल हेल्थ मिशन) डॉ.समित शर्मा के अनुसार चिकित्सा विभाग की वेबसाइट पर सभी तरह की जानकारी उपलब्ध है। और ऑनलाइन आवेदन 25 मई से मांगे है।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक विमला देवी के लिए पी.के. प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, 31 पटेल नगर, 22 गोदाम, राम मंदिर जयपुर, जयपुर में मुद्रित एवं जी-48, सिने स्टार (सिटी स्टार), सेन्ट्रल स्पाईन, विद्याधर नगर, जयपुर -302039 से प्रकाशित।
सम्पादक : विमला देवी, E-Mail : safalraj2012@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर। मो. 8829966661, 9251166661, 9214466661